प्रारंभिक समष्टि अर्थशास्त्र

अर्थ तथा क्षेत्र

समष्टि अर्थशास्त्र को अर्थशास्त्र की उस शाखा के रूप में परिभाषित किया जाता है जो कि समस्त अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक प्रश्नों या आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करती है ।

समष्टि अर्थशास्त्र का क्षेत्र

१) **समष्टि आय का सिद्धान्त :** समष्टि अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय आय की धारणा, उसके विभिन्न तत्वों आप की विधियों तथा सामाजिक लेखांकनों का अध्ययन किया जाता है

२) **रोजगार का सिद्धान्त :** समष्टि अर्थशास्त्र में रोजगार तथा बेरोजगारी की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है

३) **मुद्रा का सिद्धान्त :** रोजगार के स्तर पर मुद्रा की माँग तथा पूर्ति में होने वाले परिवर्तनों का फली प्रभाव पड़ता है । बैंको तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं का भी अध्ययन किया जाता है ।

४) **सामान्य कीमत स्तर का सिद्धान्त :** समष्टि अर्थशास्त्र में मुद्रा स्फीतिक मुद्रा अस्फीतिक का भी अध्ययन किया जाता है

५) **अन्तार्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धान्त :** समष्टि अर्थशास्त्र में विभिन्न देशों के बीच होने वाले व्यापार का भी अध्ययन किया जाता है । अन्ताराष्ट्रीय व्यापार के सिद्धान्त , टैरिफ, संरक्षण आदि समस्याओं के अध्ययन का समष्टि अर्थशास्त्र में काफी महत्व है

समष्टि अर्थशास्त्र व्यष्टि अर्थशास्त्र से कैसे भिन्न है

१) अध्ययन का आधार - व्यष्टि अर्थशास्त्र एक व्यक्ति, एक ग्रहस्थ, एक फर्म का अध्ययन करता है । समष्टि अर्थशास्त्र सम्पूर्ण अर्थशास्त्र के स्तर पर अर्थशास्त्र और चुनाव की समस्याओं का अध्ययन करता है ।

२) सामूहिकता की मात्रा - समष्टि अर्थशास्त्र की तुलना में व्यष्टि अर्थशास्त्र में आर्थिक चरों की सामूहिकता की मात्रा सीमित होती है ।

३) विभिन्न मान्यताएँ - व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र की मान्यताएँ अलग आलग होती है । कुछ चर व्यष्टि अर्थशास्त्र के स्थिर मान लिए जाते है जब कि समष्टि अर्थशास्त्र में उन्हे परिवर्तनशील जाना जाता है ।

१) समष्टि अर्थशास्त्र क्या है

२) समष्टि आर्थिक चरों के दो उदाहरण दीजिए

३) समष्टि अर्थशास्त्र से क्या अभिप्याय है ? इसके क्षेत्र का वर्णन कीजिए ।

४) व्यष्टि अर्थशास्त्र एवं समष्टि अर्थशास्त्र के चार मुख्य अन्तर क्या है ।

आय और उत्पाद के चक्रीय प्रवाह

१) **आय और उत्पाद का चक्रीय प्रवाह -** आय और उत्पाद के चक्रीय प्रवाह से अभिप्राय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में मौद्रीक आय के प्रवाह या वस्तुओं ओर सेवाओं के चक्रीय रूप में प्रवाह (नई) मौद्रीक प्रवाह एवं वास्तविक प्रवाह की धारणा

1) **वास्तविक प्रवाह -** आय के वास्तविक प्रवाह से अभिप्राय यह है कि परिवार क्षेत्र द्वारा प्रदान की गई उत्पादन के कारकों की सेवाओं का प्रवाह उत्पादक क्षेत्र की ओर होता है तथा उत्पादक क्षेत्र द्वारा उत्पादित वस्तुओं ओर सेवाओं का प्रवाह परिवार क्षेत्र की ओर होता है ।

A) **उत्पादक क्षेत्र -** परिवार क्षेत्र का वस्तुओं एवं सेवाओं की आपूर्ति करता है ।

B) **परिवार क्षेत्र -** उत्पादन के कारकों के स्वामियों के रूप मे उत्पादन के कारकों (या कारक सेवाओं) की आपूर्ति उत्पादक क्षेत्र का करता है ।

2) **मुद्रा का प्रवाह -** मुद्रा के प्रवाह से अभिप्राय कारण आय अर्थात लगान, ब्याज, लाभ और मजदूरी का उत्पादक क्षेत्र से परिवार क्षेत्र की ओर उनकी कारक सेवाओं के मौद्रिक पुरस्कारों के रूप में होनेवाले प्रवाह से है ।

समावेश या भरण - समावेश या भरण के प्रवाह चर है जो अर्थव्यवस्था में उत्पादन की प्रक्रिया में वृद्धि करते है उदाहरण - निवेश, निर्यात आदि ।

वापसी या भरण - वे प्रवाह चर है जिनका उत्पादन की प्रक्रिया में ऋणात्मक प्रवाह पड़ता है ।

उदाहरण - बचत, आयात, सरकार द्वारा लगाए गए कर आदि

स्टाक - का अर्थ किसी एक विशेष समय बिन्दु पर मापी जानेवाली अर्थिक चर की मात्रा है ।

उदाहरण - मुद्रा का परिमाण, धन गोदाम रखे गेहूँ की मात्रा, टकी में रखा पानी आदि ।

प्रवाह - का अर्थ एक आर्थिक चर ही वह मात्रा है जिसे किसी समय अवधि के दौरान मापा जाता है

उदाहरण - उपभोग

निवेश

आय

सदि में जल

१) आय और उत्पाद के चक्रीय प्रवाह से क्या अभिप्राय है ।

२) मौद्रीक प्रवाह की परिभाषा दीजिए ।

३) वास्तविक प्रवाह से आप क्या समझते है ।

४) चक्रीय प्रवाह के समावेश या भरण क्या है ।

५) वित्तीय प्रणाली के बिना दो क्षेत्रीय चक्रीय प्रवाह माण्डल बनाइए ।

६) मौद्रीक प्रवाह तथा वास्तविक प्रवाह के बीच अन्तर बताइए ।

७) स्टाक किस प्रकार प्रवाह से भिन्न है ।

दो क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था मे आय का चक्रीय प्रवाह मुख्य मान्यताए

१) अर्थव्यवस्था में केवल दे क्षेत्र, अर्थात परिवार क्षेत्र तथा फर्मे ही पाए जाते है

२) परिवार क्षेत्र फर्मों की कारक सेवाओं की अपूर्ति करता है तथा फर्मे परिवार क्षेत्र से कारक सेवाएं प्राप्त करती है ।

३) परिवार क्षेत्र अपनी समस्त आय को उपभोग पर व्यय करता है

४) फर्मे अपना समस्त उत्पादन परिवार क्षेत्र को बेचती है ।

५) सरकार तथा विदेशी व्यापार का न होना ।

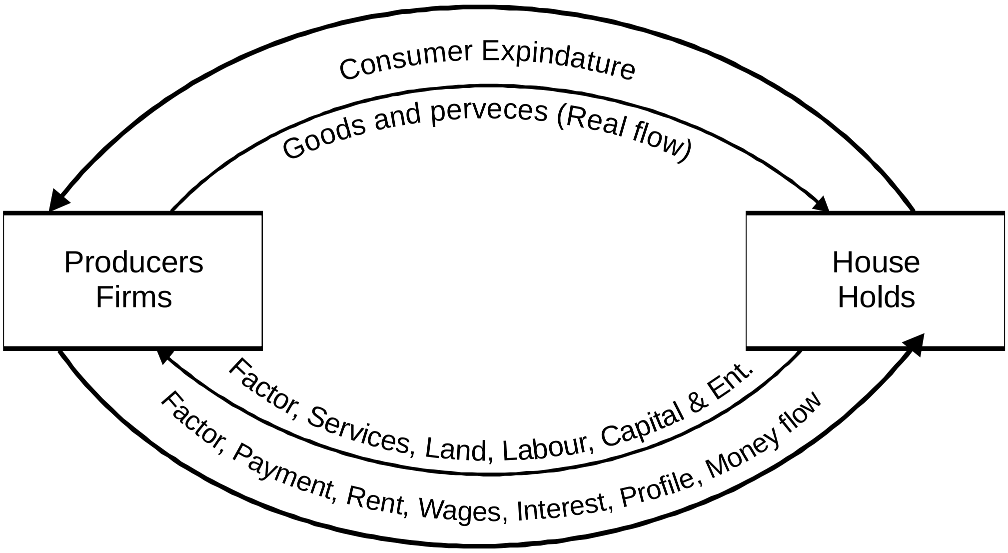

चक्रीय प्रवाह के तीन पक्ष

१) **उत्पादक पक्ष -** इसका सम्बन्ध उत्पादक क्षेत्र द्वारा किए गए वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन से है । यदि इसका अध्ययन उत्पादित वस्तुओं ओर सेवाओं की मात्रा के रूप में किया जाता है । तो यह एक वास्तविक प्रवाह है । यदि इसका अध्ययन उत्पादित वस्तुओं के बाजार शुल्क के रूप में किया जाता है तो यह मौद्रिक प्रवाह है ।

२) **वितरण पक्ष -** यह उत्पादन क्षेत्र द्वारा परिवार क्षेत्र की ओर किए गए आय (लगान, ब्याज, लाभ और मजदूरी के रूप में) प्रवाह में प्रकार करता है । यह एक मौद्रिक प्रवाह है ।

३) **व्यय पक्ष -** यह परिवार क्षेत्र एवं अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों द्वारा वस्तुओं और सेवाओं के व्यय पर किए गए व्यय को प्रकट करता है

उत्पादन ➞ आय ➞ व्यय ➞ उत्पादन

अध्ययन - ३
राष्ट्रीय आय एवं सम्बन्धीय समुच्चय

राष्ट्रीय आय की अवधारण - राष्ट्रीय आय का अर्थ है एक देश से सभी सामान्य निवासियों द्वारा एक वर्ष की अवधि में अर्जित कुल कारक आय का जोड

1. बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद (GDP_{MP})
   किसी देश की देशीय सीमा में एक लेखा वर्ष में सभी उत्पादनों (सामान्य निवासियों तथा गैर निवासियों) द्वारा जितनी भी अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है । उनकी बाजार कीमत के जोड़ को बाजार कीमत पर (सकल देशीय उत्पाद कहा जाता है ।

2. बाजार कीमत सकर राष्ट्रीय उत्पाद (GNP_{MP})
   बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद एक देश की देशीय सीमा में सामान्य निवासियों द्वारा एक लेखा वर्ष में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के बाजार मूल्य के अतिरिक्त

१. विदेशो से प्राप्त निवल कारक आय तथा
२. स्थायी पूंजी के उपभोग का जोड़ है ।
   विदेशी से निवल आय के घटक
१. कर्मचारियों की निवल क्षति पूर्ति परिश्रमिक
२. सम्पाचि तथा उद्यमवृचि से प्राप्त निवल आय
३. विदेशो मे निवासी कंपनियों द्वारा निवल प्रतिधारित आय

3. बाजार कीमत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{MP})
   बाजार कीमत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद - एक वर्ष की अवधि में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं का बाजार मूल्य + विदेशों से प्राप्त निवल कारक आय - घिरावट या पूंजी अपभोग

   अन्तिम वस्तुए - अन्तिम वस्तुएं वे वस्तुए है
   जिन्होने उत्पादन की सीमा रेखा को पार
   कर लिया है ।
   मध्यवर्ती वस्तुए - ने वस्तुए है जो अभी
   उत्पादन की सीमा रेखा मे ही है ।

4. बाजार कीमत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद- एक देश की घरेलु सीमा में सामान्य निवासियों तथा गैर निवासियों द्वारा लेखा वर्ष में उत्पादित अन्तिम वस्तुओ तथा सेवाओं के बाजार मूल्य के वराबर है । इसमें घिसावट मूल्य घटा दिया जाता है ।

5. निवल देशीय उत्पाद - एक देश की देशीय सीमा में एक लेखावर्ष में अर्जित कारक आय (लगान + मजदूरी + व्याज + लाभ) के कुल जोड को निवल देशीय आय अथवा कारक लागत पर निवल देशीय उत्पाद कहते है ।

6. कारक लागत पर सकल देशीय उत्पाद या सकल देशीय आय (GDP_{FC}) कारक लागत पर सकल देशीय उत्पाद देशीय सीमा में एक लेजावर्ष में सामान्य निवासियों द्वारा मजदूरी, लगान, व्याज तथा लाभ के रूप में अर्जित आय तथा पूंजी के उपभोग मूल्य का जोड है ।

7. कारक लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद या राष्ट्रीय आय (NNP_{FC}) एक लेखा वर्ष में किसी देश की देशीय सीमा में अर्जित कुल कारक आय (लगान + मजदूरी + व्याज तथा लाभ) तथा विदेशों से निवल कारक आय का जोड कारक लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद अथवा राष्ट्रीय आय कहलाता है ।

8. कारक लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद या सकल राष्ट्रीय आय (GNP_{FC}) सकल राष्ट्रीय आय एक देश में एक वर्ष में सामान्य निवासियों द्वारा अर्जित कारक लागतों का कुल जोड है । जिसमें अचल पूंजि का उपभोग (घिसावट व्यय) सम्मिलित रहता है ।

9. राष्ट्रीय प्रयोज्य आय - वह आय है जो किसी देश के निवासियों को सभी स्त्रोतों अर्जित आय एवं विदेशों से प्राप्त होने वाले चालू हस्तान्तरण भुगतान) से उपभोग या बचत के लिए एक वर्ष में प्राप्त होती है ।

10. निजी आय - निजी आय वह आय है जो निजी क्षेत्र को सभी स्त्रोतों से प्राप्त होने वाली कारक आय तथा सरकार से प्राप्त वर्तमान हस्तान्तरण और शेष विश्व से प्राप्त वर्तमान हस्तान्तरण का जोड़ है ।

11. वैयक्तिक आय - वैयक्तिक आय व्यक्तियों तथा परिवारों द्वारा सभी क्षोत्रों से वास्तव में प्राप्त कारक आय तथा वर्तमान हस्तान्तरण भुगतान का जोड है ।

12. वैयक्तिक प्रयोज्य आय - वह आय जो व्यक्तियों का सभी स्त्रोतों से प्राप्त होती है तथा उनके पास सरकार द्वारा उनकी आय तथा संपत्तियों पर लगाए गए सब प्रकार के करों का भुगतान करने के बाद बचती है ।

प्रश्न

1. सकल देशीय उत्पाद ही परिभाषा दीजिए ।
2. बाजार कीमत पर निवल देशीय उत्पाद की व्याख्या दीजिए ।
3. कारक लागत पर निवल देशीय उत्पाद से क्या अभिप्राय है ।
4. राष्ट्रीय आय तथा देशीय आय में अन्तर स्पष्ट कीजिए ।
5. वैयक्तिक प्रयोज्य आय क्या है ।
6. अन्तिम वस्तुए तथा मध्यवर्ती वस्तुओं में अन्तर स्पष्ट कीजिए ।
7. क्या निम्नलिखित कारक आय भारत की देशीय आय का एक भाग होती है ? अपने उत्तर के लिए कारण दीजिए ।

i. विदेशी बैंक की भारत के उनकी शाखाओं द्वारा अर्जित लाभ
ii. भारत में अमरीकी दूतावास में कार्यरत भारतीय निवासियों का प्राप्त वेतन ।
iii. एक भारतीय कम्पनी की सिंगापूर में उसकी शाखा द्वारा अर्जित लाभ ।
iv. चीन में भारतीय दूतावास में कार्यरत चीन के निवासियों का दिया जाने वाला कर्मचारियों का परिश्रमिक ।

अध्ययन -४

राष्ट्रीय आय का माप

१. उत्पाद विधि या मूल्य वृद्धि विधि

उत्दाप विधि वह विधि हे जो एक लेजा वर्ष में देश की घरेलू सीमा के अन्तर्गत प्रत्येक उत्पादन उद्यम के उत्पादन में योगदान की गणना करके राष्ट्रीय आय को मापती है ।

मूल्य वृद्धि - उत्पाद का मूल्य - मध्यवर्तीय उपभोग

उत्पाद का मूल्य = विक्री + Δ स्टाक यदि वर्ष के दौरान कुछ उत्पाद बिना बिका रह जाता है ।

स्टाक में परिवर्तन - Δ स्टाक - अन्तिम स्टाक - प्रारम्भिक स्टाक

उत्पाद विधि - या मुल्य वृद्धि से सम्बन्धित सावधानियों

१. पुरानी वस्तुओं के क्रम विक्रय के मूल्य वृद्धि में शामिल नही किया जाता है ।
२. पुरानी वस्तुओं के व्यापारियों की दलाली या कमीशन को शुल्क वृद्धि के शामिल किया जाता है ।
३. मध्यवर्ती वस्तुओं के शुल्क को मूल्य वृद्धि में शामील नही किया जाता क्योंकी मध्यवर्ती वस्तुओं का मूल्य - अन्तिम वस्तुओं के मूल्य में शामिल होता है ।
४. स्वउपभोग सेवाओं का मूल्य वृद्धि से शामिल नही किया जाता क्योंकि इनके मूल्य का अनामान लगाना कठिन होता है ।

दोहरी गणना की समस्या जब एक वस्तु के मूल्य की गणना एक बार से अधिक होती है तो इसे दोहरी गणना कहते है । इस के फलस्वरूप राष्ट्रीय उत्पाद में अनावश्यक रूप में वृद्धि हो जाती है ।

दोहरी गणना से कैसे बचा जाए ?

अन्तिम उत्पाद विधि

इस विधि के अनुसार दोहरी गणना की गलती से बचने के लिए उत्पादन के मूल्य में से मध्यवर्ति वस्तुओं के मूल्य को घटा दिया जाता है । केवल अन्तिम वस्तुओं के मूल्य को शामिल किया जाता है ।

2. मूल्य वृद्धि विधि - से अभिप्राय है कि उत्पादन की प्रत्येक अवस्था में प्रत्योक फर्म द्वारा वस्तु के शुल्क में जितना शुल्क जोडा गया है । मूल्य वृद्धि की गणना करने के लिए किसी उत्पादन के मूल्य में से उसकी लागत को घटा दिया जाता है ।

उदाहरण - एक अर्थव्यवस्था में केवल दो फर्मे

i) Aया B है इन फर्मो के बारे में निम्नलिखित सूचना के आधार पर ये ज्ञात कीजिए

ii) A फर्म तथा B फर्म द्वारा मूल्य वृद्धि

B बाजार कीमत पर सकल मूल्य वृद्धि या सकल देशीय उत्पाद

i)	फर्म A का निर्यात	20
ii)	फर्म A का आयात	50
iii)	फर्म A की परिवारों को बिक्री	90
iv)	फर्म A द्वारा फर्म B को बिक्री	40
v)	फर्म B द्वारा फर्म A को बिक्री	30
vi)	फर्म B द्वारा परिवारों को बिक्री	60

उदाहरण - २ नीचे दिए गए आंकडों की सहायता से (i) बाजार कीमत पर सकल मूल्य वृद्धि तथा राष्ट्रीय आय ज्ञात करे ।

	उत्पादन का मूल्य	(रूपए)
i)	प्राथमिक क्षेत्र	800
ii)	द्वितीयक क्षेत्र	200
iii)	तृतीयक क्षेत्र	300

2. **आय निधि**

आय निधि का विधि है जो एक लेखा वर्ष में उत्पादन के प्राथमिक कारकों (श्रम, भूमि पूंजी तथा उद्यम) को उनकी उत्पादक सेवाओं के बदले में क्रमश मजदूरी, लगान, ब्याज तथा लाभ के रूप में लिए गए भुगतान की गणना करके राष्ट्रीय आय का माप करती है ।

कारक आय की गणना के समय सावधानियाँ

1. हस्तान्तरीत आय - जैसे वृद्धावस्था पैंशन, बेरोजगारी भत्ता, छात्र वृत्तियाँ, जेब खर्च आदि से राष्ट्रीय आय से शामिल नही किया जाता है ।
2. गैर कानूनी कार्यो- जैसे स्मलिंग, चोरी जुए आदि से प्राप्त आय को राष्ट्रीय आय के शामिल नही किया जाता है इसका कारण यह है कि इस प्रकार की आय का कोई लेखा नही होता है ।
3. पुरनानी वस्तुए - जैसे पुरानी कार, पुराना मकान, पुरानाा टी.वी. आदि को बेचकर प्राप्त होने वाली आय को राष्ट्रीय आय से शामिल नही किया जाता ।
4. शेयर तथा बाँण्ड्स का बेचकर प्राप्त होने वाली आय को राष्ट्रीय आय से शामिल नही किया जाता है । क्योंकि इसके फलस्वरूप वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन नही होता ।
5. अप्रत्यक्ष करो जैसे बिक्री कर उत्पादन कर आदि के फलस्वरूप वस्तुओं कीमत में वृद्धि होती है इसलिए ये बाजार कीमत पर राष्ट्रीय उत्पाद या आय में तो शामिल होते है । परन्तु राष्ट्रीय आय या कारक लागत पर राष्ट्रीय उत्पाद में शामिल नही होती ।
6. निगम कर, लाभांश तथा अवितरित लाभ - तीनों ही लाभ का ही भाग होते है । इसलिए यदि राष्ट्रीय आय में लाभ को शामिल किया जाता है । इसलिए यदि राष्ट्रीय आय में लाभ को शामिल किया जाता है । तो निगम कर, लाभांश अवितरित लाभ का अलग से शामिल नही किया जाना चाहिए ।

   से (लागत उदाहरण)

कारक आय का वर्गीकरण

1. कर्मचारियों का परिश्रमिक - इसके अत्नर्गत

i) नकद मजदूरी तथा वेतन

ii) किस्म के रूप में आय

iii) सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में मालिकों के योगदान

iv) सेवा निवृत्त कर्मचारियों की पेंशन को शामिल किया जाता है ।

2. प्रचालन अधिशेष - इसके अन्तर्गत सम्पत्ति तथा उद्यमशीलता से प्राप्त आय को शामिल किया जाता है । यह अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों अन्तर्गत निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्रों दोनों के ही उद्यमों में उत्पन्न होता है । प्रचालन अधिशेष कि निम्न मुदों को शामिल किया जाता है ।

i) लगान या किराया तथा रॉयल्टी

ii) ब्याज तथा

iii) लाभ (लाभांश + निगमकर + अवितरित लाभ)

3. मिश्रित आय स्वरोजगार - व्यक्ति जैसे किसान छोटे दुकानदार डाक्टर आदि अपने कारकों जैसे श्रम पूंजी भूमि आदि की सहायता से वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन करते है । अत उन्हे ब्याज लाभ लगान मजदूरी आदि के रूप में मिली जुली आय प्राप्त होती है इसलिए इसे मिश्रित आय कहा जाता है

आय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना

कर्मचारियो का परिश्रमिक + प्रचालन अधिशेष + स्व नियोजितों की मिश्रित आय
↓
निवल देशीय आय या कारक लागत पर निवल देशीय उत्पाद

\+

विदेशों से निवल कारक आय

=

कर्मचारियों का परिश्रमिक + प्रचलन अधिशेष + स्वनियोजिताओं मिश्रित आय + विदेशों से निवल कारक आय
↓
निवल राष्ट्रीय आय या कारक लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद

निम्नलिखित आकड़ों की सहायता से आय विधि द्वारा

i) निवल देशीय आय

ii) सकल देशीय आय

iii) निवल राष्ट्रीय आय

iv) बाजार कीमत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद ज्ञात करे ।

		(कराड़ रू.)
i)	अप्रत्यक्ष कर	9000
ii)	आर्थिक सहायता	1,800
iii)	मूल्य ह्रास्व	1,700
iv)	स्वरोजगार की मिश्रित आय	28,000
v)	प्रचालन अधिशेष	10,000
vi)	विदेशों से निवल कारक आय	(-)300
vii)	कर्मचारियों की क्षतिपूर्ति	24,000

3. **व्यय विधि**

व्यय विधि, वह विधि है जिसके द्वारा एक लेखा वर्ष में बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद पर किए गए अन्तिम व्यय का माप जादा है । यह अन्तिम व्यय बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद के बराबर होता है ।

अन्तिम व्यय का वर्गीकरण

1. बिजी अन्तिम उपभोग व्यय - इससे अभिप्राय व्यक्तियों परिवारों तथा गैर लाभवाली निजी संस्थाएँ या सेवा संस्थाएँ द्वारा अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं पर किए गए व्यय से होता है ।
2. सरकार द्वारा अन्तिम उपभोग व्यय - इससे अभिप्राय सरकार द्वारा अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं पर किए गए व्यय से है । जैसे सेना द्वारा उपभोग के लिए वस्तुओं की खरीद पर व्यय ।
3. निवेश व्यय - इससे अभिप्राय उत्पादकों द्वारा अन्तिम वस्तुओं की खरीद पर किए गए व्यय से है । इन वस्तुओं का उत्पादन प्रक्रिया में आगे प्रयोग किया जाता है ।
4. निवल निर्यात - से अभिप्राय एक लेखा वर्ष में किसी देश द्वारा शेष विश्व को किए गए निर्यात तथा शेष विश्व से किए गए निर्यात तथा शेष विश्व से किए गए आयात के अन्तर से है ।

   निर्यात से अभिप्राय देश की घरेलू सीमा में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं पर विदेशीओं द्वारा किए जाने वाले व्यय से है इस के विपरीत आयात से अभिप्राय उस व्यय से है जो विदेशों में उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं पर होनेवाले व्यय को कुल व्यय में जोड़ा जाता है ।

निजी अन्तिम उपभोग व्यय
\+ सरकारी अन्तिम उपभोग व्यय
\+ व्यवसायिक स्थायी निवेश
\+ सरकारी स्थायी निवेश
\+ रिहायसी मकान के निर्माण पर निवेश
\+ माल सूची निवेश
\+ निवल निर्यात
= बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद

} सकल देशीय स्थायी निवेश

व्यय विधि सम्बन्धी सावधानिया -

1. कुल व्यय का माप करते समय दोहरी गणना से बचने के लिए केवल अन्तिम व्यय को ही उसमे शामिल किया जाना चाहिए ।
2. राष्ट्रीय आय की गणना करते समय मध्यवर्ती वस्तुओं के व्यय को शामिल नही किया जाना चाहिए । क्योंकि मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य को पहले ही अन्तिम वस्तुओं के मूल्य में शामिल कर लिया जाता है ।
3. पुरानी वस्तुओं पर किए जाने वाले व्यय को कुल व्यय में शामिल किया नही जाता । क्योंकी पुराना वस्तुओं का मूल्य पहले ही उस वर्ष की राष्ट्रीय आय में शामिल कर लिया जाता है ।
4. सरकार द्वारा हस्तानान्तरण भुगतान जैसे वृद्धवस्था पेंशन, छात्रवृत्ति पर किए गए व्यय के इसमें शामिल नही किया जाता क्योंकि इनके बदले में कोई वस्तु या सेवा प्राप्त नही होती

   उदाहरण

निम्न आंकडो से कारक लागत पर देशीय उत्पाद ज्ञात करे

	मदे	रु.
i)	सकल देशीय निवेश	10,000
ii)	माल सूची निवेश	5,000
iii)	घिसावट	2,000
iv)	अप्रत्यक्ष कर	1,000
v)	आर्थिक सहायता	2,000
vi)	उपभोग व्यय	20,000
vii)	रिहायसी मकान पर निर्माण व्यय	6,000

I) उदाहरण

i) आय विधि तथा ii) व्यय विधि द्वारा निम्नलिखित आंकडों से सहायता से बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद ज्ञात करें ।

	मदे	करोड रु.
i)	स्वनियोजितों की मिश्रित आय	400
ii)	कर्मचारियों का पारिश्रमिक	500
iii)	निजी अंतिम उपभोग व्यय	900
iv)	विदेशों में निवल कारक आय	(-)20
v)	निवल अप्रत्यक्ष कर	100
vi)	अचल संपत्ति का उपभोग	120
vii)	निवल देशीय पूंजी निर्माण	280
viii)	निवल निर्यात	(-)30
ix)	लाभ	350

II) उदाहरण

निम्नलिखित आंकडों से सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय ज्ञात कीजिए ।

	मदे	करोड रु.
i)	राष्ट्रीय	2000
ii)	शेष विश्व से निवल चालू हस्तान्तरण	200
iii)	स्थायी पूंजी का उपभोग	100
iv)	विदेशों से निवल कारक आय	(-)50
v)	निवल अप्रत्यक्ष कर	250

प्रश्न

1) आय विधि से क्या अभिप्राय है ?
2) प्राथमिक क्षेत्र की व्याख्या कीजिए ?
3) एक अर्थ व्यवस्था में द्वितीयक क्षेत्र का क्या अर्थ है ?
4) दोहरी गणना की समस्या से कैसे बचा जा सकता है ?
5) राष्ट्रीय आय के माप की व्यय विधि से क्या अभिप्राय है ?
6) व्यय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय को मापने में ली जानेवलि कोई तीन सावधानियाँ बताइए ?

7) दोहरी गणना की समस्या की व्याख्या करे तथा इससे बचने के उपायों को समझाइए ।

8) राष्ट्रीय आय के गणना करने के लिए आय विधि का वर्णन कीजिए ?

9) आय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय मापने की चार सावधानियों की संक्षेप में व्याख्या करें ।

10) मूल्य विधि द्वारा राष्ट्रीय आय को मापने के लिए कौन सी सावधानियाँ आवश्यक है ।

II) उदाहरण

निम्न आंकडों से

i) आय विधि तथा व्यय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय का आकलन कीजिए

	मदे	रु. करोड
i)	कर्मचारियों का परिश्रमिक	600
ii)	सरकार द्वारा अन्तिम उपभोग व्यय	550
iii)	विदेशों से निवल कारक आय	-10
iv)	निवल निर्यात	-15
v)	लाभ	400
vi)	निवल अप्रत्यक्ष कर	60
vii)	स्वनियोजितों की मिश्रित आय	350
viii)	लगान	200
ix)	ब्याज	310
x)	निजी अन्तिम उपभोग व्यय	1000
xi)	निवल देशीय पूंजी निर्माण	385
xii)	अचल पूंजी का उपभोग	85

उदाहरण

निम्नलिखित आंकडों से (आ) निजी आय और (ब) व्यक्तिक प्रयोज्य आय ज्ञात कीजिए ।

	मदे	रु. करोड
i)	निजी क्षेत्र द्वारा देशीय उत्पाद में होनेवाले आय	4000
ii)	गैर विभागीय सार्वजनिक उद्यमों की बचत	200
iii)	सरकारि प्रशासनिक विभागों से पूंजीतर हस्तान्तरण	150
iv)	निजी निगमित क्षेत्र की बचत	400
v)	शेष विश्व से पूंजीतर हस्तान्तरण	50
vi)	विदेशों से निवल कारक आय	-40
vii)	निगम कर	60
viii)	वैयक्तिक प्रत्यक्ष कर	140

उदाहरण

निम्नलिखित आंकडों से कारक लागत पर सकल वर्धित मूल्य (मूल्यवृद्धि) ज्ञात कीजिए

	मदे	रु. लाखों में
i)	विक्री	180
ii)	किराया	5
iii)	आर्थिक सहायता	10
iv)	स्टाक में परिवर्तन	15
v)	कच्चे माल का क्रय	100
vi)	लाभ	25

मुद्रा - अर्थ, विकास एवं कार्य

१) अर्थ एवं विकास - हम अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहते है । अत: इस निर्भरता के फलस्वरूप ही वस्तुओं ओर सेवाओं का विनिमय होता है ।

२) वस्तु विनिमय प्रणाली - वस्तु विनिमय प्रणाली उस प्रणाली को कहते है जिसमें वस्तु का विनिमय वस्तु से किया जाता है ।

३) वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयाँ -

i) आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कठिनाई आवश्यकताओं का दोहरा संयोग वस्तु विनिमय प्रणाली की एक पूर्व शर्त है । आवश्यकताओं के दोहरे संयोग से अभिप्राय यह है कि किसी एक व्यक्ति की वस्तु दूसरे की आवश्यकताओं को और दूसरे व्यक्ति की वस्तु पहले की आवश्यकता को पूरा करती है ।

ii) मूल्य की सामान्य इकाई का अभाव - आप किसी लेखा प्रणाली का विकास कैसे कर सकते है । जब की आपके पास कोई मूल्य की समान इकाई नही है । आपके पास कैसे लेखा प्रणाली हो सकती है जब की एक वस्तु का मूल्य बाजार में दूसरी वस्तु के रूप में निर्धारित होता है और जहाँ कोई मुद्रा मूल्य नही है ।

iii) भविष्य में किए जाने वाले या ठेके के भुगतानों की प्रणाली का अभाव

iv) मूल्य संचय प्रणाली का अभाव

मुद्रा की परिभाषा :

मुद्रा की परिभाषा ऐसी किसी भी वस्तु के रूप में दी जा सकती है जिसे साधारणतया विनिमय का माध्यम स्वीकार किया जाता है और इसके साथ ही जो मूल्य के मापक और मूल्य के संचय का भी कार्य करती है ।

मुद्रा का वर्गीकरण -

i) पूर्णकाय मुद्रा
ii) प्रतिनिधि पूर्ण काय मुद्रा
iii) साख मुद्रा

मुद्रा के कार्य -

i) विनिमय का माध्यम
ii) मूल्य का मापक या मूल्य की इकाई
iii) स्थिगित भुगतानों का मान
iv) मूल्य का संचय
v) मूल्य का हस्तान्तरण
vi) साख निर्माण का आधार
vii) अधिकतम संतुष्टि का माप
viii) राष्ट्रीय आय का वितरण
ix) पूंजी की तरलता में वृद्धि

मुद्रा की पूर्ति की माप

M1 = जनता के पास करेन्सी + माँग जमाएँ + रिजर्व बैंक के पास अन्य जमाएँ

M2 = M1 + डाक खानों के बचत बैंके में जमाए

M3 = M1 + व्यापारिक बैंको की निवल सावधि जमाएँ

M4 = M3 + डाक खानों की कुल जमाएँ NSC छोडकर

प्रश्न

1 वस्तु विनिमय की परिभाषा दो ।

2 दोहरे संयोग की आवश्यकता का क्या अर्थ है ?

3 मुद्रा के दो कार्यों की संक्षेप में व्याख्या कीजिए ?

4 वस्तु विनिमय प्रणाली के कोई दो दोषों को बताइए ?

5 रिजर्व बैंक आफ इंडिया नें मुद्रा की पूर्ति को कैसे वर्गीकरण किया है ?

6 भारतीय मौद्रिक प्रणाली की व्याख्या कीजिए ?

बैंकिंग वाणिज्यिक बैंक तथा केन्द्रीय बैंक

१) वाणिज्यिक बैंक - वह वित्तीय संस्था है जो लोगों के रूपये अपने पास जमा के रूप में स्वीकार करती है । और उनके उपभोग अथवा निवेश के लिए उधार देती है ।

२) वाणिज्यिक बैंक के कार्य

i) जमा स्वीकार करना
ii) निश्चित कालीन या सावधि जमा खाता
iii) चालू जमा खाता
iv) बचत जमा खाता
v) आवर्ती जमा खात
vi) ऋण देना - नकद साख, ओवर ड्राफ्ट, माँग ऋण, अल्प अवधि ऋण

गौण कार्य -

i) विभिन्न मदों का एकत्रीकरण और भुगतान
ii) प्रतिभूतियों की खरीद तथा बिक्री
iii) रूपया भेजना
iv) विदेशी मुद्रा का क्रय विक्रय
v) लाँकर की सुविधा
vi) यात्री चैक तथा साख प्रमाण पत्र
vii) वाणिज्यिक सूचनाएँ तथा आँकडे

केन्द्रीय बैंक

केन्द्रीय बैक देश की संपूर्ण बैंकिंग प्रणाली का अध्यक्ष है
प्रत्येक केन्द्रीय बैंक का एक कार्य है । यह अर्थव्यवस्था मुद्रा की पूर्ति तथा साख को नियंत्रित करने का कार्य करता है ।

केन्द्रीय बैंक के कार्य

i) नोट जारी करना
ii) सरकार का बैंक
iii) बैंकों का बैंक
iv) बैंको का निरीक्षण
v) अन्तिम ऋणदाता
vi) देश के विदेशी मुद्रा कोष का संरक्षक
vii) समाशोधन गृह का कार्य
viii) साख मुद्रा का नियंत्रण

केन्द्रीय बैंक मुद्रा की पूर्ति अथवा अर्थ व्यवस्था में साख के प्रवाह को कैसे नियंत्रित करता है ।

A) **मौद्रिक नीति के मात्रात्मक उपाय**

i) बैक दर

ii) वाणिज्यिक बैंको की केन्द्रीय बैंक से फंड्स की माँग की संवेदलशीलता का अंश

iii) मुद्रा बाजार के ब्याज दर का ढाँचा

iv) बाजार में समुचित फंड्स की पूर्ति

B) **मौद्रिक नीति के गुणात्मक उपाय**

i) सीमान्त आवश्यकता

ii) साख की राशनिग

iii) प्रत्यक्ष कार्यवाही

iv) नैतिक प्रभाव

प्रश्न

1 एक वाणिज्कि बैंक की परिभाषा दो।

2 बैंक के प्राथमिक कार्यो के नाम बताइए ?

3 बैंक की विभिन्न जमाएँ कौन सी है?

4 वाणिज्यिक बैंक के दो कार्यो की व्याख्या दीजिए?

5 केन्द्रीय बैंक के चार प्रमुख कार्य बताइए?

6 मात्रात्मक साख नियंत्रण की कोई एक विधि बताइए?

7 साख नियंत्रण के गुणात्मक उपकरणों की व्याख्या कीजिए ?

8 खुले बाजार की क्रियाओं द्वारा एक केन्द्रीय बैंक साख की उपलब्दता को कैसे नियंत्रित करता है ?

समग्र माँग, समग्र पूर्ति तथा सम्वन्धित अवधारणाँए

समग्र माँग - वह कुल व्यय है । जो एक देश के निवासी आय के दिए हुए स्तर पर वस्तुओं तथा सेवाओं को खरीदने के लिए खर्च करने को तैयार है ।

समग्र माँग = उपभोग व्यय + निवेश व्यय

समग्र माँग अनुसूचि तथा वक्र

आय (y)	समग्र माँग (AD)
0	20
10	25
20	30
30	35
40	**40**
50	45
60	50

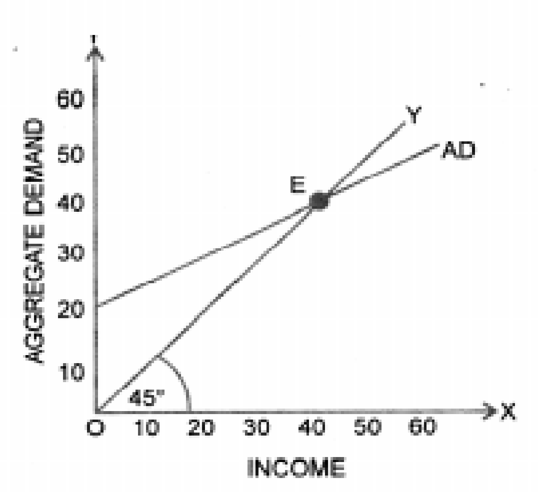

समग्र पूर्ति - अर्थव्यवस्था में समग्र पूर्ति का रोजगार स्तर से धनात्मक सम्बन्ध होता है । अन्य बाते समान रहते पर रोजगार का स्तर जितना ऊंचा होगा, उत्पादन का स्तर भी उतना ऊँचा होगा ।

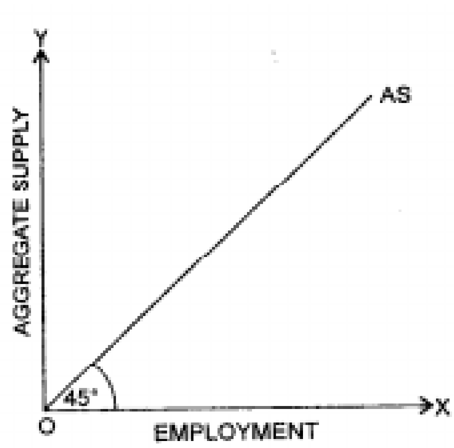

समग्र पूर्ति अनुसूची एवं वक्र

रोजगार का स्तर	समग्र पूर्ति
0	0
10	10
20	20
30	30
40	40
50	50
60	60

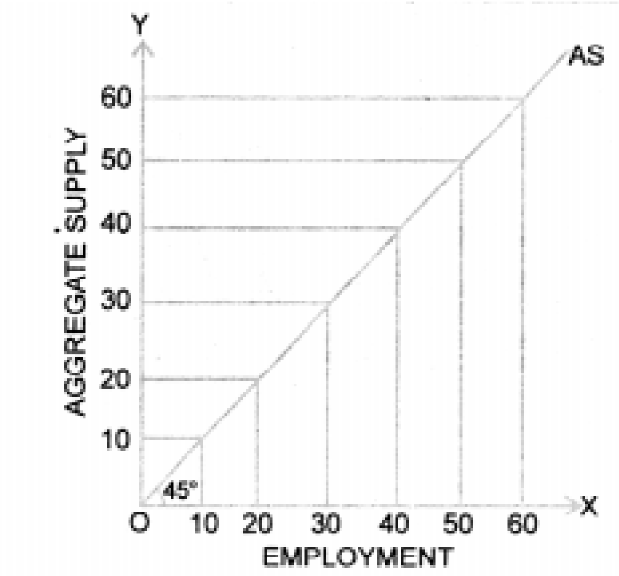

उपभोग फलन - उपभोग और आय में पाए जाने वाले सम्बन्ध को उपभोग फलन कहते है

C = f (y)

सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति -

आय (y)	आय में परिवर्तन (Δ y)	उपभोग (c)	उपभोग में परिवर्तन (Δ c)	सीमांत उपभोग प्रवृत्ति MPC = $\frac{\Delta c}{\Delta y}$
100	-	80	-	-
200	100	120	40	$\frac{40}{100}$ = 0.4
300	100	150	30	$\frac{30}{100}$ = 0.3

प्रश्न

1 समग्र माँग से क्या अभिप्राय है ।

2 उपभोग प्रवृत्ति का अर्थ बताइए

3 समग्र माँग के मुख्य अंग या संघटक के नाम बताइए ।

4 पूर्ण रोजगार क्या है ।

5 समग्र माँग में कोई तीन घटक बताइए ।

6 चित्र की सहायता से समग्र पूर्ति की अवधारणा की व्याख्या कीजिए

7 उपभोग फलन किसे कहते है । उपयुक्त चित्र द्वारा इसके व्यवहार को दिखाइए ।

आय रोजगार तथा उत्पादन के सन्तुलन स्तर का निर्धारण

१. आय अथवा उत्पादन का सन्तुलन स्तर क्या है ?

आय (अथवा उत्पादन) के सन्तुलन के स्तर से अभिप्राय आय / उत्पादन के उस स्तर से है जिस पर सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की समग्र पूर्ति समग्र माँग के बराबर होती है ।

समग्र पूर्ति = समग्र माँग

समग्र पूर्ति = आय = उपभोग + बचत

समग्र माँग = उपभोग व्यय + निवेश व्यय

इस प्रकार सन्तुलन तब होता है जब

उपभोग + बचत = उपभोग व्यय + निवेश व्यय

↓

समग्र पूर्ति = समग्र माँग

क्लासिकी / परम्परावादी विचार धारा की अन्तर्गत

आय / उत्पादन का सन्तुलन स्तर

1 समग्र पूर्ति तथा समग्र माँग दृष्टिकोण
2 समग्र पूर्ति समग्र माँग के बराबर होती है ।
3 इन दोनों में सन्तुलन अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार के स्तर पर होता है ।

रेखाचित्रिय उदाहरण - यदि किसी अर्थ व्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति पायी जाती है तो क्लासिकी अर्थशास्त्रीयों का यह विचार था ऐसी अर्थ व्यवस्था में उत्पादन अपने उच्चतम तथा स्थिर स्तर पर होगा जैसा की चित्र में दिखाया गया है । चित्र में oy अक्ष पर कीमत स्तर तथा ox अक्ष पर उत्पादन को प्रकट किया गया है । उत्पादन OL पर स्थिर है । अर्थ व्यवस्था में स्तिर उत्पादन OL कीमत स्तर से प्रभावित नही होगा इसलिए कीमत स्तर के सम्बन्ध में समग्र पूर्ति खडी रेखा दिखाया गया है ।

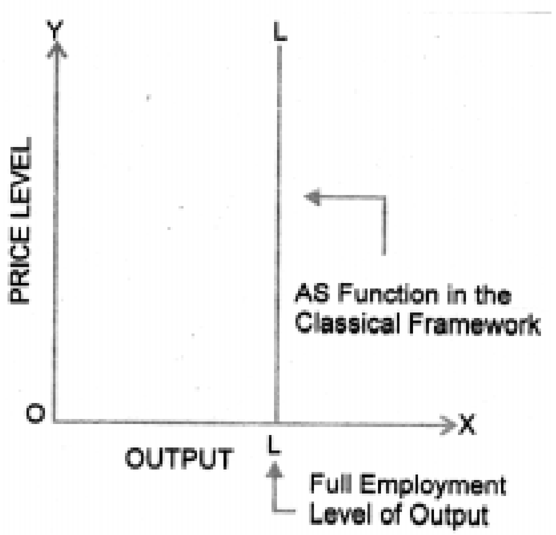

बचत निवेश दृष्टिकोण - (S - I Approach) क्लासिकी अर्थशास्त्रियों के अनुसार बचत ब्याज दर का फलन अर्थात $S = f(r)$ है बचत तथा ब्याज की दर का प्रत्यक्ष सम्बन्ध है अर्थात ब्याज की ऊँची दर पर बचत अधिक तथा कम दर पर बचत कम होती है जैसा कि चित्र में दिखाया गया है । कि बचत S S का ढलान नीचे से ऊपर की ओर है इससे प्रकट होता है की बचत ब्याज की दर के साथ बडती रहती है ।

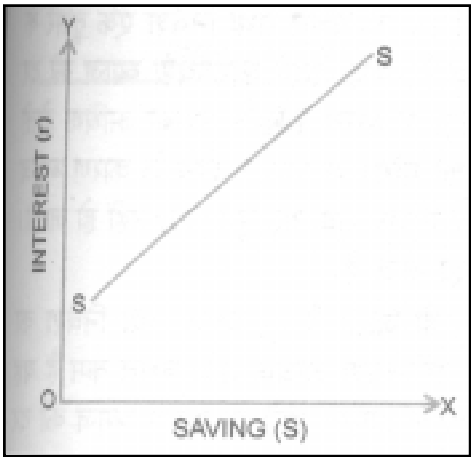

निवेश गुणक तथा उसका कार्यकरण

निवेश में किए गए परिवर्तन को गुणा करके उसके फलस्वरूप आय में हुई वृद्धि का अनुमान लगाया जा सकता है ।
गुणक की धारणा निवेश में प्रारम्भिक परिवर्तन के परिणाम स्वरूप आय में होनेवाले अन्तिम परिवर्तन के सम्बन्ध में व्यक्त करती है

$$K = \frac{\Delta y}{\Delta I}$$

K = गुणक

Δy = आय में परिवर्तन

ΔI = निवेश में परिवर्तन

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति	गुणक
$MPC = \frac{\Delta c}{\Delta y}$	$K = \frac{1}{1-MPC}$
0	$\frac{1}{1-0} = 1$
$\frac{1}{3}$	$K = \frac{1}{1 - \frac{-1}{3}} = 1 = \frac{1}{\frac{2}{3}} = 1.5$
$\frac{1}{2}$	$K = \frac{1}{1 - \frac{-1}{2}} = \frac{1}{\frac{1}{2}} = 2$
$\frac{3}{4}$	$K = \frac{1}{1 - \frac{3}{4}} = \frac{1}{\frac{1}{4}} = 4$
$\frac{4}{5}$	$K = \frac{1}{1 - \frac{4}{5}} = \frac{1}{\frac{1}{5}} = 5$
$\frac{9}{10}$	$K = \frac{1}{1 - \frac{9}{10}} = \frac{1}{\frac{1}{10}} = 10$
1	$K = \frac{1}{1-1} = \frac{1}{0} = \infty$

तालिका में समग्र माँग तथा समग्र पूर्ति के रूप में उत्पादन आय तथा रोजगार के सन्तुलन के स्तर को दिखाया गया है ।

समग्र माँग तथा समग्र पूर्ति के रूप में संतुलन

रोजगार का स्तर (000 श्रमिक)	समग्र पूर्ति करोडों रू. (AS)	समग्र माँग (करोडों रू.) (AD)
0	0	20
10	10	25
20	20	30
30	30	35
40	**40**	**40** AD = AS संतुलन
50	50	45
60	60	50
पूर्ण रोजगार		

प्रश्न

1 आय अथवा उत्पाद के सन्तुलन स्तर की परिभाषा दे ।

2 से का बाजार नियम क्या है ?

3 चित्र की सहायता सै अल्प रोजगार सन्तुलन अवधारणा की व्याख्या कीजिए ? उसी चित्र पर पूर्ण रोजगार सन्तुलन प्राप्त करने के लिए जरूरि अतिरिक्त निवेश व्यय को दिखाए ।

4 आय के सन्तुलन स्तर पर नियोजित बचत तथा नियोजित निवेश क्यो बराबर होने चाहिए ? रेखा चित्र की सहायता से व्याख्या करो ?

5 उपभोग (C) + निवेश (I) वक्र से सहायता से आय के सन्तुलन स्तर की अवधारणा की व्याख्या कीजिए क्या सन्तुलन स्तर पर बेरोजगारी हो सकती हे व्याख्या कीजिए ।

प्रश्न

1 विवेश गुणक की परिभाषा दो ।

2 निवेश गुणक को ज्ञात करने का सूत्र दो ।

3 यदि गुणक का मूल्य 4 है तो किसी अर्थ व्यवस्था के निवेश में 100 करोड रू की वृद्धि होने से उसकी आय पर क्या प्रभाव पडेगा ।

4 निवेश गुणक तथा सीमान्त उपभोग प्रवुत्ति सम्बन्ध की व्याख्या कीजिए ?

5 एक तालिका की सहायता से गुणक के कार्यकरण की व्याख्या कीजिए ।

6 निवेश गुणक क्या अर्थ है ? सीमांत उपभोग प्रवृत्ति और निवेश गुणक के बीच सम्बन्ध की व्याख्या कीजिए ।

न्यून और अधि माँग की समस्याएँ

न्यून माँग - न्यून माँग वह स्थिति है जिसमें समग्र माँग अर्थ व्यवस्था में पूर्ण रोजगार के लिए आवश्यक समग्र पूर्ति से कम होती है ।

i) समग्र माँग का स्तर पूर्ण रोजगार के लिए आवश्यक समग्र माँग के स्तर से कम है ।

ii) न्यून माँग स्थिति में अर्थ व्यवस्था में समग्र माँग पूर्ण रोजगार के लिए आवश्यक समग्र पूर्ति से कम होती है ।

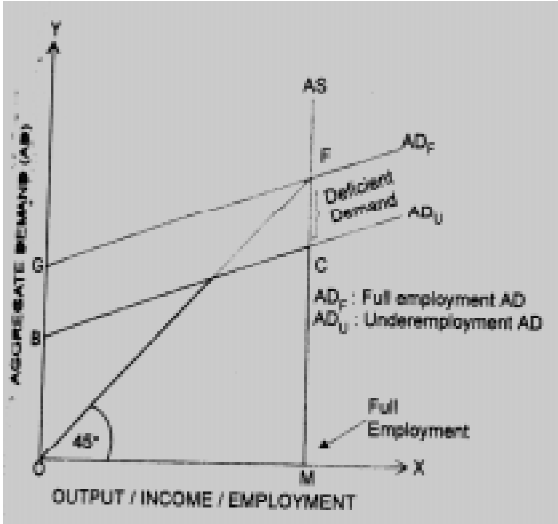

अधि माँग वह स्थिति होती है जिसमें समग्र माँग अर्थ व्यवस्था में पूर्ण रोजगार के लिए आवश्यक समग्र पूर्ति से अधिक होती है ।

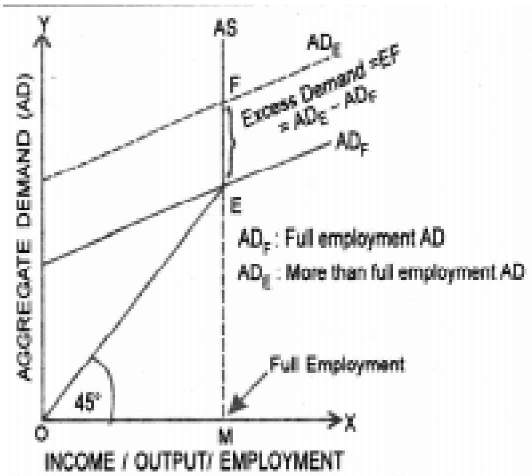

प्रश्न

1 न्यून माँग से क्या अभिप्राय है ।

2 अपूर्ण रोजगार सन्तुलन से क्या अभिप्राय है ।

3 अर्थव्यवस्था में अधि माँग की परिभाषा दीजिए ।

4 न्यून माँग से आप क्या समझते है ?

5 रेखाचित्र की सहायता से अवस्फीतिक तथा स्फीतिक अन्तरालों की व्याख्या कीजिए ।

6 रेखाचित्र की सहायता से किसी अर्थव्यवस्था में न्यून माँग की स्थिति की व्याख्या करें ।

न्यून तथा अधि माँग को ठीक करने के उपाय

राजकोषीय नीति के उपाय

1) सरकारी या सार्वजनिक व्यय से सम्बन्धित राजकोषीय उपाय
2) सरकारी व्यय की वित्त व्यवस्था या सार्वजनिक आय प्राप्ति सम्बन्धी उपाय
3) सरकारी व्यय से सम्बन्धित राजकोषीय उपाय
   i) सार्वजनिक निर्माण
   ii) सार्वजनिक कल्याण
   iii) देश की सुरक्षा तथा कानून

सरकारी व्यय की वित्त व्यवस्था या सरकारी आय से सम्बन्धित राजकोषीय उपाय

1) कराधान, सार्वजनिक ऋण एवं घाटे की वित्त व्यवस्था
2) कर - प्रत्यक्ष कर, अप्रत्यक्ष कर
3) सार्वजनिक ऋण
4) घाटे की वित्त व्यवस्था

राजकोषीय नीति एवं न्यून माँग

1) करों में कमी
2) सार्वजनिक व्यय में वृद्धि
3) घाटे की वित्त व्यवस्था में वृद्धि
4) सार्वजनिक ऋण में कमी

राजकोषीय नीति एवं अधि माँग

1) करों में वृद्धि
2) सार्वजनिक व्यय में कमी
3) घाटे की वित्त व्यवस्था में कमी
4) सार्वजनिक ऋण में वृद्धि

मौद्रिक नीति के उपाय

मात्रात्मक उपाय

i) बैंक दर
ii) खुले बाजार की क्रियाए
iii) न्यूनतम नकद निधि अनुपात में परिवर्तन
iv) तरलता अनुपात में परिवर्तन

गुणात्मक उपाय

i) ऋणों की सीमांत अवश्यकता में परिवर्तन
ii) साख की राशनिंग
iii) प्रत्यक्ष कार्यवाही
iv) नैतिक प्रवाह

प्रश्न

1 बैंक दर क्या होती है ।

2 राजकोषीय नीति के क्या अर्थ है ?

3 प्रत्यक्ष करों के दो उदाहरण दीजिए ?

4 अधि माँग को ठीक करने के उपायों का वर्णन करों ?

5 न्यून माँग से क्या अभिप्राय है इसे ठीक करने के लिए दो मौद्रिक उपाय बताइए ?

सरकारी बजट तथा अर्थव्यवस्था

सरकारी बजट एक वित्तीय वर्ष की अवधि के दौरान सरकार की प्राप्तियों (आय) तथा सरकार के व्यय के अनुमानों का विवरण होता है ।

सरकारी बजट के उद्देश्य

1) आय तथा सम्पत्ति का पुन: वितरण
2) संसाधनों का पुन: आवंटन
3) आर्थिक स्थिरता
4) सार्वजनिक उद्यमों का प्रबन्ध

बजट के घटक

i) राजस्व बजट
ii) पूंजीगत बजट

बजट प्राप्तियाँ

i) रास्व प्राप्तियाँ
ii) पूंजीगत प्राप्तियाँ

बजट व्यय

i) राजस्व व्यय
ii) पूंजीगत व्यय

बजट घाटा

i) राजस्व घाटा
ii) राजकोषीय घाटा
iii) प्राथमिक घाटा

प्रश्न

1 सरकारी बजट की परिभाषा दीजिए ?
2 भारत के वित्त वर्ष से क्या अभिप्राय है?
3 सरकारी बजट के दो भाग बताइए ?
4 राजस्व प्राप्तियों से आप क्या समझते है ?
5 सरकारी बजट के चार उद्देश्यों को लिखो ?
6 प्राथमिक घाटा, राजकोषीय घाटा तथा राजस्व घाटा से आशय है?

विदेशी विनिमय दर

विदेशी विनिमय दर एक देश की मुद्रा की एक इकाई के बदले में दूसरे देश की मुद्रा की कितनी इकाईया मिल सकती है इसका माप है ।

विनिमय दर की प्रणालियाँ या प्रकार

1) स्थिर विनिमय दर प्रणाली

2) नम्य विनिमय दर प्रणाली

विनिमय दर की प्रणालिया लाभ तथा हानियाँ

1) स्थिरता

2) अन्तार्राष्ट्रीय व्यापार को बढावा

3) समष्टिगत नीतियों में समन्वय

हानियाँ

1) विशाल अन्तर्राष्ट्रीय निधियाँ

2) पूंजी की सीमित गति

3) जोखिम पूंजी का निरूत्साहित होना

विदेशी विनिमय बाजार - वह बाजार है जिससमें संसार के विभिन्न देशों की राष्ट्रीय करेंसियों को बेचा जाता है ।

कार्य

1) हस्तान्तरण कार्य

2) साख कार्य

3) जोखिम से बचाव

प्रश्न

1 विदेशी विनिमय दर से क्या अभिप्राय है ?

2 लोचशील विनिमय दर को समझाइए ?

3 स्थिर विनिमय दर की व्याख्या कीजिए ?

4 सन्तुलन विनिमय दर का निर्धारण कैसे होता है ?

भुगतान शेष

भुगतान शेष का सम्बन्ध किसी देश के शेष विश्व के साथ हुए सभी आर्थिक लेन देन के लेखांकन के रिकार्ड से है ।
एक देश का भुगतान सन्तुलन उस देश के निवासियों तथा विदेशों में किए गए सभी आर्थिक सौदों का क्रमबद्ध लेखा है ।

भुगतान शेष के आर्थिक सौदे

1) दृश्य मदे
2) आदृश्य मदे
3) पूंजी अन्तरण

भुगतान शेष का चालू खाता तथा पूंजी खाता
चालू खाता - वह खाता है चिसमें वस्तुओं और सेवाओं के आयात और निर्यात एवं एक पक्षीय अन्तरणों का हिसाव किताब रखा जाता है ।

चालू खाते की मदे

1) वस्तुओं का आयात तथा निर्यात
2) सेवाओं का आयात तथा निर्यात
3) एक देश से दूसरे देश को एक पक्षीय अन्तरण

पूंजी खाता

पूंजी खाता वह खाता होता है जो एक देश के निवासियों एवं शेष संसार के निवासियों द्वारा किए गए उन सभी लेन देनों से सम्बन्धित है जिनमें किसी देश की सरकार और निवासियों की परि सम्पत्तियों और दायित्वों में परिवर्तन होता है

पूंजी खाते की मदे

1) सरकारी सौदे
2) गैर सरकारी और निजी सौदे
3) प्रत्यक्ष निवेश

प्रश्न

1 भुगतान सन्तुलन से आप क्या समझते है ?
2 व्यापार शेष की परिभाषा दीजिए ?
3 भुगतान सन्तुलन में दृश्य मदों तथा आदृश्य मदों को बताइए ?
4 भुगतान शेष खाते के चालू खाते और पूंजी खाते की चार - चार मदे बताइए ?
5 अनुकूल भुगतना सन्तुलन से आप क्या समझते है ?
6 व्यापार शेष में 5000 करोड रूपए का घाटा है और आयात का मूल्य 9000 करोड रू. है । निर्यात का मूल्य कितना है ?
7 व्यापर शेष 5000 करोड़ रूपये के घाटे को प्रकट करता है और आयातों का मूल्य करोड़ 9000 रू. है । निर्यातों का मूल्य क्या है ?